

दलाई लामा का कथन है कि- हम जीवन के आरम्भ अर्थात् बाल्यावस्था में तथा जीवन के अंत अर्थात् वृद्धावस्था में दूसरों की मदद लेने के लिए बाध्य हैं। अतः युवावस्था में हमारा यह कर्तव्य है कि आलस्य, शिथिलता, उदासीनता और निष्क्रियता का परित्याग कर समाज हित और राष्ट्रहित के लिए कार्य करें।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर नाना प्रकार के कर्मों का संपादन करता है। मानव के कर्मों का प्रभाव परस्पर एक दूसरे पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि कर्मों के संपादन के क्रम में इस बात का बोध अवश्य हो कि आखिर हमारे कर्तव्य क्या हैं? समाज में शांति एवं व्यवस्था की स्थापना तथा अन्यों के अधिकारों की सुरक्षा हेतु कर्तव्यों का पालन आवश्यक है।

पद, स्थिति और समर्थ के अनुसार जो करने योग्य है या जिसे किया जाना चाहिए, वह कर्तव्य है। कर्तव्य एक प्रकार का नैतिक उत्तरदायित्व है।

अगर कर्तव्यों के स्वरूप पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि इसके दो मुख्य रूप हैं- पहला स्वैच्छिक और दूसरा बाध्यकारी। इसे हम भारतीय संविधान के भाग-IV में वर्णित 11 मौलिक कर्तव्यों के संबंध में देख सकते हैं। वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा, ज्ञानार्जन की क्षमता का विस्तार, राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को संजोए रखना, भारत के कम्पोजिट कल्चर की गौरवशाली परम्परा के महत्व को समझना और उसकी रक्षा करना आदि स्वैच्छिक कर्तव्य हैं। जबकि राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर, प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा, सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखना आदि बाध्यकारी कर्तव्य हैं। इनके उल्लंघन के स्थिति में दण्डात्मक कार्यवाही संभव है।

काँट ने भी कर्तव्यों को दो भागों में बांटा था- पहला अपूर्णबाध्यता संबंधी कर्तव्य और दूसरा पूर्णबाध्यता संबंधी कर्तव्य। दान देना, कमजोर लोगों की मदद करना आदि अपूर्णबाध्यता संबंधी कर्तव्य हैं। यह पूर्णतः हमारी स्वेच्छा पर निर्भर करता है। जबकि नियम और कानून आदि का पालन पूर्णबाध्यता संबंधी कर्तव्य हैं। इनका उल्लंघन करने पर दण्ड संभव है।

चूँकि कर्तव्यों में स्वेच्छा का तत्व प्रधान होता है। अतः कई बार व्यक्ति कर्तव्यों का संपादन न कर निष्क्रिय हो जाता है। परन्तु यह निष्क्रियता व्यक्ति के साथ-साथ समाज के लिए भी हानिकारक है। यदि सभी व्यक्ति दूसरों के संदर्भ में निष्क्रियता का पालन करने लगे तो फिर समाज में सहयोग, सामंजस्य एवं सद्भावना पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। साथ ही दूसरों के अधिकारों की भी ठीक से रक्षा नहीं हो पायेगी जैसे- यदि किसी व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है तो फिर शिक्षक को आलस्य और निष्क्रियता को त्यागकर अपने कर्तव्य का पालन अर्थात् बच्चों को ठीक से पढ़ाना होता है।

निष्क्रियता आलस्य का परिणाम है। यह अकर्मण्यता की ओर ले जाता है इससे जीवन में निराशा बढ़ती है और उत्साह कम होता है। इससे स्वयं के साथ-साथ समाज पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

परिवार में माता-पिता और अन्य बड़े सदस्य जब आलस्य और निष्क्रियता को त्यागकर अपने कर्तव्यों को ठीक से निर्वहन करते हैं तो फिर परिवार में सुख-शांति के साथ बच्चों में भी अच्छे मूल्यों का बीजारोपण होता है। बच्चे संस्कारी होने लगते हैं।

सामाजिक क्षेत्र में भी जब युवा छात्र-छात्राएँ, प्रशासक और अन्य बुद्धिजीवी वर्ग (डॉक्टर, नेता, वकील, इंजीनियर आदि) अपने आलस्य का परित्याग कर समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को ध्यान रखते हुए सक्रिय होते हैं तो इससे एक तरफ अंध विश्वास, रूढ़िवादिता, भेदभाव, शोषण आदि को रोकने में मदद मिलती है तो दूसरी ओर समाज में शांति, व्यवस्था, सुरक्षा, स्वच्छता और सहयोग की भावना भी प्रबल होती है।

प्रशासनिक संदर्भ में जब अधिकारी नियमों और कानूनों का पालन करते हुए, कोड ऑफ कंडक्ट और कोड ऑफ इथिक्स को ध्यान में रखते हुए सिविल सेवा के बुनियादी मूल्यों जैसे- सत्यनिष्ठा, गैर-तरफदारी, निष्पक्षता आदि से युक्त होकर अपने अधिकारों का सदुपयोग और कर्तव्यों का पालन करते हैं तो फिर सुशासन और नैतिक शासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

वस्तुतः कर्तव्यों के पालन से व्यक्तिगत हित के साथ-साथ समष्टिगत सुख एवं समृद्धि में भी वृद्धि होती है। गीता में स्वधर्म पालन की अवधारणा पर विशेष बल दिया गया है।

दूसरी ओर गाँधी जी भी 'धर्म' का आशय व्यक्तिगत अनिवार्य कर्तव्यों का पालन, क्षमा, दया, प्रेम, सत्य, अहिंसा आदि से लेते हैं। स्वयं उन्होंने अपना जीवन सामाजिक कल्याण तथा भारतीय औपनिवेशिक बेड़ियों को तोड़ने के प्रति समर्पित कर दिया। साथ ही दूसरों के उनके अनिवार्य कर्तव्यों को उनमें जागृत करने का प्रयास किया। उनका प्रसिद्ध कथन है-

“स्वयं को जानने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना।”

महान लेखक पाउलो कोएलो का कथन है कि “संसार आपके कर्मों से बदलता है आपकी धारणा (Opinion) से नहीं।” एक निष्क्रिय व्यक्ति राज्य के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है तथा नागरिक समस्याओं के लिये सरकार को पूर्ण रूप से जिम्मेदार मानता है। वहीं सक्रिय व्यक्ति अपने कर्मों द्वारा व्हीसल ब्लोअर, सूचना के अधिकार तथा वोट के माध्यम से सरकारी दायित्वों को उजागर करने का कार्य करता है। बहुत से लोग जब उम्मीदवारों को पसंद नहीं करते तो वोट देने के लिये नहीं जाते हैं जो उनकी निष्क्रियता को दर्शाता है वहीं कुछ नागरिकों द्वारा NOTA का प्रयोग जोकि इतना प्रभावी न हो परन्तु पार्टियों द्वारा अच्छी छवि के उम्मीदवारों को टिकट देने के लिये प्रेरित अवश्य करता है।

प्रसिद्ध कथन है कि “आप जो आज भी करते हैं उसका प्रभाव पड़ता है।” दार्शनिक सार्त्र - मनुष्य को मनुष्य का भविष्य मानता है, क्योंकि हमारे कर्म, हमारे साथ-साथ अन्यो की स्वतंत्रता को भी निर्धारित करते हैं। सक्रिय कर्म से विश्वास तथा साहस का सृजन होता है वहीं निष्क्रियता अपने साथ डर तथा संदेह को लाती है। 'पिकासो' का कथन है कि 'कर्म ही सफलता की मूल कुंजी है।' वहीं कबीर कर्तव्य के महत्व को इंगित करते हुए कहते हैं कि-

**“काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।”**

आज आवश्यकता है कि समाजीकरण के माध्यम से बच्चों के मन-मस्तिष्क में मूल्यों को रोपित किया जाए। शैक्षणिक संस्थान द्वारा विभिन्न महापुरुषों की जीवनी एवं उनकी शिक्षाओं के माध्यम से छात्र-छात्राओं में कर्तव्य की भावना एवं उत्तरदायित्व बोध को विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

वर्तमान में भी व्यक्तियों द्वारा अपने सामाजिक, शैक्षिक, पारिवारिक, व्यवसायिक, पर्यावरणीय व विधिक कर्तव्यों का पालन आवश्यक है ताकि इस जीवन रूपी नाव को कर्म रूपी सक्रिय धारा से गति मिले। उद्देश्य तो पवित्र है परन्तु इसके लिये सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है तभी वैश्विक कल्याण तथा सतत् विकास की रूपरेखा सुनिश्चित की जा सकती है। जैसा की कथन है-

“मीलों हम आ गये, मीलों अभी जाना है।”

बात 1963 की है। विक्रम साराभाई के नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक केरल के थुम्बा में भारत के प्रथम रॉकेट प्रक्षेपण की तैयारी कर रहे थे। रॉकेट के पार्ट्स साईकिल एवं बैलगाड़ी आदि से भी लॉन्चिंग पैड के नजदीक लाया जा रहा था। दुनिया के कई देश इसे जानकार व्यंग्य एवं उपहास कर रहे थे। परन्तु भारतीय वैज्ञानिकों के मन में जीत का दृढ़ संकल्प था। संसाधनों की कमी का रोना रोने या हताश एवं निराश होने के बजाय वे जी-जान से लगातार प्रयास कर रहे थे। आरम्भ में असफलता भी मिली परन्तु आज स्थिति है कि इसरो (ISRO) पूरे विश्व में उपग्रह प्रेक्षपण में सफलता एवं विश्वास का पर्याय बन गया है। चन्द्रयान एवं मंगलयान से आगे बढ़ते हुए आदित्य एल-1 और गगनयान की तैयारी हो रही है।

‘मन के हारे हार है, मन के जीते जीत’ यह साधारण सी कहावत में जीवन का दर्शन निहित है। मन को जीतना कठिन है परन्तु “जिसने मन को जीत लिया, उसने जगत् को जीत लिया।”

मनुष्य की समस्त जीवन प्रक्रिया का संचालन उसके मस्तिष्क द्वारा होता है। मन व मस्तिष्क प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं। मन में हम जिस प्रकार का विचार रखते हैं हमारे शरीर व मस्तिष्क भी उसी के अनुरूप ढलने लगता है। यथा यदि हमारे मन में निराशा या हीन भावना है तो हमारा शरीर भी शिथिल रहता है। वहीं आशावादी मन होने पर हमारे भीतर स्फूर्ति व सकारात्मकता का संचार रहता है। इसी मनःस्थिति के बारे में कवि मैथलीशरण गुप्त ने कहा है—

“नर हो, न निराश करो मन को।
 कुछ काम करो, कुछ काम करो।।”

जब हम मन में हार मान लेते हैं तो किसी कार्य को शुरू करने की व निरंतर प्रयास करने की कोशिश ही नहीं करते। वहीं अगर हम किसी कार्य को करने की मन में ठान लेते हैं तो लाख मुश्किलें आने के बावजूद हम ऊर्जा के साथ निरंतर प्रयास करते रहते हैं और यही प्रयास हमें सफलता रूपी विजय प्रदान करता है। महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ने पर इसी तथ्य की पुष्टि होती है। जीवन में दृढ़ इच्छाशक्ति सफलता का प्रथम सोपान है। कहा भी गया है—

“लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
 कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती”

कमजोर मानसिकता वाले लोग छोटी-छोटी कठिनाई या बाधा आने पर भी निराश होकर कर्म के मार्ग से विचलित हो जाते हैं और भाग्य का बहाना बनाने लगते हैं। वहीं दृढ़ इच्छा शक्ति वाले विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानते हुए निरंतर उत्साहपूर्वक कर्म करते हैं और अन्ततः सफलता को शिरोधार्य करते हैं।

जीवन में सफलता हेतु दृढ़ मनोबल जरूरी है। कठिनाईयाँ, चुनौतियाँ, दुःख, कभी-कभी उत्पन्न होने वाले तनाव और निराशा हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। मानसिक रूप से सजग और सुदृढ़ तथा दृढ़संकल्पित व्यक्ति लक्ष्य सिद्धि के क्रम में इनसे लड़ते हुए, विजित करते हुए कर्म पथ पर लगातार आगे बढ़ता जाता है। आशावाद एवं आत्म-विश्वास मन के ऐसे दो स्तम्भ हैं, जिस पर सफलता टिकती है। कहा भी गया है कि—

‘जो भी परिस्थितियाँ मिलें,
 काँटे चुभे कलियाँ खिलें,
 हारे नहीं इंसान,
 है संदेश जीवन का यही।’

महात्मा गांधी से लेकर नेल्सन मंडेला तक, सावित्री से लेकर मीरा तक, थॉमस एडिसन और आइंस्टीन से लेकर अब्दुल कलाम तक, रानी झाँसी से लेकर इन्दिरा गांधी तक एक चीज जो सबमें समान मिलती हैं वह है इनका दृढ़ मनोबल । इसी मनोबल के सहारे इन्होंने सफलता को प्राप्त किया।

वस्तुतः मन की जीत ही सफलता और उपलब्धियों की जननी और प्रेरणास्रोत है। मन की निराशा, हीनता या हार का भय सफलता के मार्ग में कंटकों के समान है जो प्रगति और समृद्धि के द्वार बन्द कर देती है। जीवन रूपी रणभूमि में विजयश्री उन्ही को मिलती है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानते हुए निरन्तर जूझने और विजित होने का दृढ़ संकल्प पाले रखते हैं। इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि मन में सफलता का अंकुर निहित होता है।

जीवन में मन के महत्व को इंगित करते हुए कहा गया है कि-

**“दुःख सुख सब कहँ परत हैं, पौरुष तजहु न मीत,
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।”**

अर्थात् इस संसार में दुःख और सुख तो सभी पर पड़ते हैं, इसलिए मनुष्य को अपना पौरुष नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि हार और जीत मन के मानने और न मानने पर ही निर्भर करती हैं।

इस संदर्भ में किसी शायर ने ठीक ही कहा है कि-

**मुश्किलें दिल के इरादें आजमाती है।
स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती है।।
हौसला मत हार ओ मुसाफिर गिरके।
ठोकरें मनुष्य को चलना सिखाती हैं।**

